इतिहास की ऐतिहासिक परम्परा

—मो० अकरम लारी 'आजाद'*—

वस्तुतः इतिहास मानव की स्वयं के बारे में जानने की जिज्ञासा है। इसका उद्गम जिस रूप में हुआ था, आज के इतिहास का स्वरूप उससे पूर्णतः भिन्न है। प्रायः इतिहास को साहित्य का ही एक ऐसा रूप समझा जाता है जिसका आधार सत्य के बीज से निकलता है। इतिहास का जन्म वहाँ हुआ जब प्रथम बार मनुष्य ने सोचा कि प्रकृति केवल एक व्यर्थ क्रम में नियमानुसार स्वमेव गतिमान कालचक्र नहीं अपितु यह अनेक विशिष्ट घटनाओं की निरन्तर बढ़ती जा रही क्रिया है, और ऐसी चेतना के आते ही किसी मानव मस्तिष्क ने इतिहास को अप्रत्यक्ष रूप से जन्म दिया था।

इतिहास एक भ्रमपूर्ण शब्द है। इसके दो अर्थ हो सकते हैं–या तो इसका तात्पर्य घटनाओं के लेखा-जोखा से हो सकता है या स्वयं घटनाओं से ही–वस्तुतः घटनाएं इतिहास नहीं होती बल्कि इनका लेखा-जोखा होता है।[1]

पृथ्वी पर आज तक जो कुछ हुआ और जो हो रहा है, वह भी इतिहास है किन्तु इस प्रकार का अनन्त इतिहास अध्ययन के सुविधानुसार विभिन्न स्वरूपों में विभक्त कर दिया गया है। जैसे पृथ्वी के उद्भव का इतिहास, जीव के विकास का इतिहास, वनस्पति विज्ञान का इतिहास तथा मानव की सभ्यता का इतिहास। यहां हमारा आशय मनुष्य की सभ्यता के विकास के इतिहास से है। हमारे अध्ययन का विषय इतिहास की वह शाखा है जिसका केन्द्र मानव के उत्थान-पतन से सम्बद्ध है।

अंग्रेजी शब्द History ग्रीक के Historia से निकला है जिसका अर्थ "ज्ञात करना" होता है। लैटिन के Historia में भी यही शब्द व्यवहृत हुआ। इतिहास का पिता यूनान का हेरोडोट्स (480–430 B.C. या 484–424 B.C.) माना जाता है। हेरोडोट्स के समय किसी न किसी रूप में मिथको के रूप में ही सही इतिहास बेबीलोनिया में मौजूद था।[2] प्राचीन भारतीय ग्रन्थों "महा भारत" एवं जैन ग्रथों में भी एतिहासिक तथ्य मिलते हैं। हेरोडोट्स ने खोज की विधियों को अपनाकर फारस के युद्ध व समाज का वर्णन किया है। उसने घटनाओं को देश-काल में स्थापित किया जो इतिहास की मुख्य शर्त है। उसने राजनीतिक के साथ सांस्कृतिक घटनाओं का भी उल्लेख किया, उसका इतिहास शाश्वत है। तथापि वह तथ्यों की परख का कोई

डॉ.मोहम्मद अकरम लारी 'आज़ाद',अध्यक्ष ,इतिहास विभाग ,एन.आर.ई.सी. कॉलेज, खुरजा

उपकरण न खोज सका, जिससे उसका भी इतिहास गाथाओं से भिन्न न हो सका। इसी का समकालीन थ्यूसीडाइडीज (454–399 B.C.) अधिक वैज्ञानिक था। उसने तत्कालीन पेलोपोनिशियन युद्धों का यथार्थ वर्णन किया है। उसने तथ्यों के मापने व तौलने पर बल दिया और चश्मदीद गवाहों एवं सबूतों के आधार पर लिखा जिसे समकालीन इतिहास कहते हैं। वह मानता था कि इतिहास केवल निकट अतीत का ही लिखा जा सकता है। वह प्रथम व्यक्ति था जिसने इतिहास में विश्वसनीयता का आग्रह किया और इतिहास लेखन की एक भिन्न प्रणाली अपनायी भूत का इतिहास न लिखकर वर्तमान का इतिहास लेखन।[3] उसने इतिहास लेखन में उपयोगिता को प्राथमिकता दी और वह यथार्थ चित्रण द्वारा भावी पीढ़ियों को सीखने का अवसर देना चाहता था। जहां हेरोडोट्स का आग्रह रोचक ढंग से घटना प्रस्तुतिकरण का था, वही थ्यूसीडाइडीज का आग्रह उसके शिक्षात्मक पहलू पर था।[4] वैसे थ्यूसीडाइडीज युद्धों व राजनिति तक ही सीमित है। उस पर यह भी आरोप लगाया जाता है कि उसे कारण की स्पष्ट धारणा नहीं थी।[5] हेरोडोट्स व थ्यूसीडाइडीज द्वारा प्रस्तुत इतिहास बाद के इतिहासकारों के लिए आदर्श बना रहा तथा 2200 वर्षों तक इतिहास लेखन की यह परिपाटी बनी रही।[6] अरस्तु के अनुसार प्राचीन काल में इतिहास को अतीत की राजनीति कहा जाता था। इस प्रकार इतिहास के स्वरूप निर्धारण का श्रेय यूनानियों को है। रोमन काल में भी इतिहास को कथारूप में पेश किया गया, दस्तावेज के रूप में यह अस्पष्ट है।

जब यूरोप में इसाईत्व का प्रादुर्भाव हुआ तो उसका नाम क्रुसेन्डम (Chrusendom) पड़ गया और इतिहास की व्याख्या भी इसाईत्व पर आधृत हो गयी। उत्तरी अफ्रीका के संत अगस्टाईन (354–430 A.D.) ने इतिहास में ईश्वर की स्थापना कर दी।[7] इसाईत्व को पुराने धर्मों से अच्छा मानने वाले अगस्टाईन ने "देव नगरी" (De Civitate Dei)[8] नामक ग्रंथ में प्राचीन रोम के इतिहास का उल्लेख करते हुए अपने इतिहास दर्शन का प्रतिपादन किया। उसने इतिहास को नियतिवादी करार दिया अर्थात् इतिहास ईश्वर की लीला है। इसके बाद हजार वर्षों तक नियतिवादी इतिहास यूरोप में इसाईत्व को मानवोचित व न्योयोचित सिद्ध करता रहा। इतिहास में संयोग की भूमिका पर बल देने की धारणा से व्यवस्थित ढंग से जुड़ने वाला प्रथम इतिहास कारपोलीबस तथा दूसरा टेसिटस था। आधुनिक काल में गिबन, बरी, एच. ए. एल. फिशर, सार्त्र, मीनेक आदि भी इसी प्रवृत्ति से प्रभावित थे।

उत्तरी अफीका के ही इब्न खल्दून (D 1406) ने "मोकद्दिमा" लिखकर इतिहास दर्शन का एक महान प्रकाश स्तम्भ गाड़ दिया और सर्व प्रथम वैज्ञानिक इतिहास की बात कही थी। सही इतिहास लेखन हेतु उसने स्वयं दीर्घ यात्रायें की, तथ्यों को परखा और बताया कि इन पर विचार करना चाहिए। वह इतिहास को समाज की आवश्यक निधि मानता था और उसने पूर्वाग्रह विहीन हो वस्तुपरक इतिहास की धारणा का प्रतिपादन किया। उसने यह भी कहा कि इतिहास भविष्यवाणी भी कर

सकता है। इब्न खल्दून विचारक अधिक था, इतिहासकार कम। अतः उसके विचारों का कार्यान्वयन न हो पाया और वह मात्र शिलालेख बन कर रह गया। तत्कालीन इतिहास पर उसका प्रभाव स्पष्ट नहीं, सम्भवतः इसका कारण उसका योरपीय न होना था।

पुनर्जागरण के समय जब मानव केन्द्रित समाज की कल्पना हुई तो व्यक्ति वर्तमान से अधिक जुड़ने लगा, उसने इतिहास की खिल्ली उड़ाई और नकारा। इटली का मेकियावेली। (1469–1527 A.D.) इतिहास को वर्तमान की कठपुतली मानता था। उसने "इतिहास की दस पुस्तकों पर व्याख्यायें (Discourses on the first ten Books of Livy) इस उद्देश्य से लिखा कि प्राचीन काल के शासन व राजनिति सिद्धान्तों का अध्ययन एवं अनुशीलन करते हुए वर्तमान राजनिति में इसका उपयोग किया जाय। उसने "दि प्रिंस (the Prince) (1513) में अपने मन्तव्यों को प्राचीन ग्रीस व रोमन इतिहास के उदाहरणों से पुष्ट किया। उसने तो पहले से कुछ सिद्धांत निश्चित कर लिए और उनके समर्थन में इतिहास के प्रमाणों को ढूंढा और कहा कि हमें अतीत के तथ्यों का अपने लक्ष्य हेतु प्रयोग करना चाहिए। बार्नेस तो कहता है कि यदि मेकियावेली को अतीत के तथ्य अपने काम के न मिलते तो वह वैसा गढ़ लेता था।[9]

गणितज्ञ, दार्शनिक व तर्कशास्त्री डेकार्ट ने इतिहास को गल्प और परिकथायें माना। 16वीं–17वीं शताब्दी में इतिहास का अवमूल्यन हो रहा था। फ्रांस के पादरी मा बी लों ने कूटनीतिक इतिहास दिया; उसने दस्तावेजों के प्रयोग पर बल दिया और इसी आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का इतिहास लिखा। इस काल में अधिकांश इतिहास पादरियों व भिक्षुओं द्वारा लिखा जाने के कारण ईश्वर व भाग्य को अधिक महत्व मिला। 18वीं शती के प्रबुद्धता काल (Aufklarung) में तर्क को महत्व दिया गया और फ्रांस के फ्रैंकोमारी आरू डी "वाल्टेयर" (1694–1778 A.D.) ने नवयुग का सूत्रपात किया। उसी ने इतिहास दर्शन शब्द का आविष्कार किया।[10] उसका ग्रंथ "लुई चतुर्दश का युग" (Age of Louis XIV) विश्व में प्रथम आधुनिक इतिहास माना गया। अवधारणा की दृष्टि से भी यह आधुनिक था, इसमें लुई के काल का आश्वत इतिहास लिखा गया जिसमें राजनीति के अतिरिक्त आर्थिक व सांस्कृतिक व्यवस्था का भी वर्णन किया गया था। यद्यपि वाल्टेयर भी पूर्वाग्रह ग्रस्त था और चर्च व पोप का उग्र विरोधी था, तथापि उसने वस्तुपरक इतिहास की बात कही। इतिहास पर किया गया यह प्रथम प्रहार था।

19वीं० शताब्दी तक विज्ञान की अत्यधिक स्थापना से लोगों ने अनुभव किया कि जो विज्ञान नहीं वह व्यर्थ है। जैसे प्राकृतिक विज्ञान का विकास हुआ और मनुष्य के लिए वह उपयोगी बना, वैसे ही समाज के लिए भी एक विज्ञान की आवश्यकता हुई। फ्रांस के अगस्त कॉम्टे ने, जो समाजशास्त्र का पिता था, सामाजिक विज्ञान की

बात कही। फलस्वरूप लोग इतिहास को भी विज्ञान बनाने के फेर में पड़े और इंगलैण्ड के टामस बकिल ने कहा कि इतिहास इसलिए आगे नहीं बढ़ पा रहा है कि कोई न्यूटन जैसा इतिहासकार नहीं पैदा हुआ। प्रो० बरी ने विचार रखा कि इतिहास विज्ञान है, न कुछ कम न कुछ अधिक। फ्रांसिसी क्रांति के समय ही कोन्द्रोंसे ने वैज्ञानिक ढंग से इतिहास लेखन की बात कही थी। फांस के ही ताएँ ने बताया कि इतिहास जीव विज्ञान की भांति ही विज्ञान है, इसे भी अपने आंतरिक संरचना का पता चल गया है।

इतिहास विज्ञान है और अतीत की पृष्ठ भूमि ही इसकी प्रयोगशाला है किन्तु विज्ञान की भांति इसमें समान प्रयोग के परिणाम एक ही प्रकार के नहीं निकलते। वस्तुतः इसके योगिकों का स्वरूप भी बदलता रहता है, इसी के प्रयोग के समय इनका फल भिन्न प्रकट होता है। फिर इसमें प्रयोग की क्रियायें किसी नरापद वातावरण की प्रयोग शाला में न होकर विभिन्न देशकाल में घटित होती है, अतः इनका परिणाम भिन्न होना स्वाभाविक है। चूंकि इसका सम्बन्ध मानव के परिवर्तनशील मस्तिष्क व अनिश्चित कार्यों से होता है, अतएव ये पुनरावृत्ति में समान प्रक्रिया की उद्घोषणा तो नहीं करती, परन्तु फिर भी भविष्य मे व्यक्ति को सचेत, सतर्क और पूर्वज्ञानी बना सकती हैं।

जर्मनी का लियोपॉल्ड वान रांके अपने युग का सर्वश्रेष्ठ इतिहासज्ञ माना गया और उसके शिष्यों को जर्मनी की मुख्य इतिहासपीठ में प्रमुख स्थान मिला।[11] 1824 में अपने ग्रन्थ की भूमिका में रांके ने स्पष्ट किया कि उसका उद्देश्य भूत का मूल्यांकन करना या शिक्षात्मक ढंग से तथ्य को या घटनाओं को प्रस्तुत करना नहीं है अपितु वह प्रदर्शित करना है जो घटित हो चुका है।[12] रांके ने प्रथम बार अभिलेखागारों का उपयोग किया तथा यूरोप के राजघरानों में घूम-घूम कर दस्तावेजों को ढूंढा और इतिहास के अनेक सर्वमान्य तथ्यों को काट कर तटस्थ इतिहास की बात कहीं।[13] वह प्रशियन था तथा फ्रेंच-प्रशा युद्ध के विषय में फ्रांसिसीयों से घृणा नहीं करता है पर आलोचकों ने उदाहरण दिया है कि वह लूथर व फ्रेडरिक के बारे में लिखते समय मोहग्रस्त है। यद्यपि रांके के प्रयत्नों से इतिहास लेखन को एक नयी दिशा मिली और उसके शिष्यों ने यूरोप व अमरीका में खोज-बीन कर इतिहास लेखन की परम्परा चलायी। इतिहास को कहानी एवं शिक्षात्मक विधि के प्रस्तुतिकरण से निकालकर वैज्ञानिक आधार पर लाने का श्रेय जर्मनों को ही है।

19वीं शताब्दी में इतिहास के क्षेत्र में एक नवीन परिवर्तन हुआ, इसके आयामों का विस्तार हुआ, इसके सम्बन्ध के धारणाओं की भी व्याख्या हुई, और इसी कारण 19वीं शताब्दी "इतिहास की शताब्दी" कहलाई। रांके के प्रयासों के बावजूद कथा-रूप में इतिहास को प्रस्तुत करने वालों की संख्या और भी अधिक थी।[14] इतिहास कारों के मस्तिष्कों पर हेरोडोट्स व थ्यूसीडाईडीज का बहुत प्रभाव था, उन्होंने

थ्यूसीडाइडीज की कृतियों को तब तक का श्रेष्ठतम् कृतियां मानकर आग्रह किया कि इतिहास का वैज्ञानिकीकरण करके हम उसके नैतिक तत्वों को खत्म कर देंगे। उनका यह भी विचार था कि इतिहास तो साहित्य का अंग रहा है, अतः उसे साहित्य का ही अंग मानकर चलना चाहिए।

राबिसन व बीयर्ड ने इतिहास को विज्ञान बनाने के विरोध में विस्तृत तर्क दिया। ट्रेवेलियन ने "क्लियो, एम्यूज" (Clio Amuse) नामक लेख में बताया कि इतिहास की देवी कला की देवी है। गिब्बन की "डिक्लाइन एण्ड फाल ऑफ रोमन एम्पायर" व मैकाले एवं कार्लाइल की पुस्तकों की लोकप्रियता का उदाहरण देकर सिद्ध किया गया कि आज का नीरस इतिहास भी तटस्थ नहीं होता है।

कार्ल मार्क्स (1818–1883 A.D.) ने जर्मनी की आदर्शवादी विचारधारा, इंगलैण्ड की राजनीतिक व अर्थशास्त्रीय विचारधारा तथा फ्रांस की समाजवादी विचार-धारा से पृथक-पृथक सीखकर निष्कर्ष निकाला कि समाज को समझने का मुख्य आधार इतिहास है, परन्तु तब तक का उपलब्ध इतिहास उसे अपर्याप्त एवं त्रुटिपूर्ण लगता था, और उसने इतिहास को उत्पादन सम्बन्धों का इतिहास पाया। अपने पूर्व के दार्शनिकों के नैतिक आधार के विपरीत मार्क्स ने सर्वप्रथम इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की, जिसका आधार था मानव समाज का विकास वर्ग संघर्ष के माध्यम से हुआ। उसने बताया कि समाज की प्राचीनतम दशा "आदिम साम्यवादी युग" में सम्पत्ति नहीं थी और सब सबका होने के कारण कोई संघर्ष नहीं था, मानव में वर्ग न था। दास प्रथा के विकास के साथ मानव द्वारा मानव के श्रम का शोषण शुरू हुआ और यहीं से वर्ग संघर्ष भी; दासों ने उत्पीड़न व दमन के विरूद्ध आदिम विद्रोह किया, जैसे-स्पार्टिकस विद्रोह इसके बाद अर्द्ध दासों के विकास के साथ सामन्तवाद का जन्म हुआ, जिसमें भूमि एक व्यक्ति की थी और उस पर अनेक अर्द्धदास या भूदास (Serf) कृषि करते थे। इस प्रकार भूपतियों व भूमिहीनों का संघर्ष शुरू हुआ। सामन्तों के मध्य से पूंजीवाद का जन्म हुआ और सामन्तों व पूंजीपतियों में युद्ध प्रारम्भ हुआ तथा शनैः शनैः पूंजीपतियों की विजय होने लगी; 1789 ई० की फ्रांसिसी क्रांति में शक्ति सामन्तों के हाथ से पूंजीपतियों के हाथ में चली गयी। फिर सर्वहारा वर्ग व पूंजीपति वर्ग का युद्ध चला, सर्वहारा के पास श्रम के अतिरिक्त अन्य कुछ न था। जब मार्क्स लिख रहा था तो यही समय था। उसने लिखा कि जैसे अब तक शोषक वर्ग विकास करता रहा है, वैसे ही सर्वहारा वर्ग विकास सन्मुख है और एक दिन वह पूंजीवाद पर विजय निश्चित पा लेगा। इस विजय क्रांति के बाद समाज-वादी निर्माणकाल शुरू होगा जो सर्वहारा के अधिनायकत्व में चलेगा। फिर शनैः शनैः वर्ग संघर्ष खत्म हो जायेगा क्योंकि संसार में केवल सर्वहारा बचेंगे और तब साम्यवाद की स्थापना होगी; एक वर्ग विहीन समाज होगा तथा इसके बाद राज्य की भी आवश्यकता न होगी और वह समाप्त हो जायेगा। इस प्रकार उसने इतिहास को मानव समाज के विकास के

अध्ययन का आंकड़ा बना दिया, जिससे व्यक्ति वर्तमान को समझकर भविष्य की योजना बना सकता था, इससे इतिहास काफी वैज्ञानिक हो गया। मार्क्स की भविष्यवाणियां सही हुई; जैसे, रूसी क्रांति व चीनी क्रांति में उसने इतिहास का मूल आधार आर्थिक माना, जिसे अधिकांश जन स्वीकार करते हैं।

मार्क्स के विचार पहले के सभी विचारों को एक चुनौती थे और इसने इतिहास दर्शन में खलबली मचा दी। उसके मतानुसार संस्कृतियों के निर्माण में आर्थिक पक्ष प्रमुख रहा है तथा यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू में दिखायी पड़ता है। उसने ऐतिहासिक विद्या के पीछे एक प्रकार का एकत्व देखा और बताया कि इतिहासकारों को इतिहास की आम घटनाओं का आर्थिक पृष्ठभूमि में विश्लेषण करना चाहिए, जिससे वे परिवर्तन सहज ही समझ में आ जायेगा। ऐतिहासिक विद्या की चरम परिणति वर्गविहीन समाजवादी समाज है जो एक स्वतन्त्र समाज है।[15] मार्क्स से पूर्व राबर्टओवन, हैरिंगटन व स्पेंसर ने भी इतिहास की आर्थिक व्याख्या का प्रतिपादन किया था। मार्क्स का ज्ञान अनन्त था; उसके मृत्युपरांत उसके विचार अत्यधिक प्रभावकारी सिद्ध हुए। ग्रे ने उसे निर्विवाद रूप से 19वीं शती का सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति माना है। यद्यपि उसके विचार ऐतिहासिक विद्या के एक पक्ष को प्रस्तुत करते हैं और वे सम्पूर्ण सत्य नहीं हैं। उसका द्वंदात्मक भौतिकवाद एवं वर्ग संघर्ष भी इतिहास के सब तत्वों को समझने में सहायक नहीं है।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या के सिद्धान्त से यह फल स्वतः निकलता है कि इतिहास के सारे परिवर्तन एक निश्चित दिशा में हो रहें हैं, जो पूंजीवाद के पतन की दिशा है। द्वन्दात्मक पद्धति से इतिहास में भविष्य की ऐसी दिशा को पहले से ही निश्चित कर दिया गया, जिस ओर हमारे चाहे बिन चाहे इतिहास की प्रगति होना अनिवार्य है। ऐतिहासिक नियतिवाद के सम्बन्ध में एक बार मार्क्स ने एक पत्र में लिखा था कि, विश्व इतिहास में यदि संयोग के लिए स्थान न होता तो इसका चरित्र बड़ा ही रहस्यवादी होता।[16] उसने इतिहास में संयोग के तीन उपादान स्वीकार किये, प्रथम यह घटनाक्रम को गति दे सकता है या बाधा पहुंचा सकता है किन्तु उसमें कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं ला सकता। द्वितीय, एक संयोग दूसरे द्वारा प्रतिदत्त होता है, इस प्रकार अंत में संयोग स्वयं को रद्द कर देता है। तृतीय, संयोग का विशेष निदर्शन व्यक्तियों के चरित्रों में होता है।[17] ट्रटास्की ने इस सिद्धान्त को बल दिया कि पूरी ऐतिहासिक प्रक्रिया दुर्घटनात्मकता के माध्यम से ऐतिहासिक नियमों का परावर्तन है।[18]

हीगल, स्पेंगलर व टायन्बी का इतिहास दर्शन काफी सन्निकट है। जी. डब्लू. एफ. हीगल के अनुसार इतिहास एक भौतिक अभिज्ञान नहीं है बल्कि एक विचार के उन्मज्जन में है जिसमें सम्राट या राष्ट्र के नैतिक विकास पर आग्रह है। इस विचार का उदय शनैः शनैः संस्कृति के विकास के आधार पर होता है। इतिहास का केन्द्रीय

विषय स्वतन्त्रता है।[19] कारण ही विश्व का नियामक है, अतः विश्व-इतिहास एक युक्तिपूर्ण विद्या है। उसके अनुसार इतिहास प्रगतिशील था और प्रकृति प्रगतिशील नहीं थी।[20] हीगल के विचारों का भावी इतिहासकारों पर काफी प्रभाव पड़ा।

ओस्वाल्ड स्पेंगलर के मतानुसार इतिहास सांस्कृतिक इकाईयों से मिलकर बना है और हर संस्कृति की एक निजी विशेषता होती है। प्रत्येक संस्कृति का उदय, विकास व ह्रास होता है। इतिहास लयहीन निरर्थक दीर्घकथा नहीं, अपितु विभिन्न संस्कृतियों का क्रमशः विकास है।[21]

आर्नाल्ड टॉयन्बी ने "ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री" के 10 भागों में 21 सभ्यताओं का अध्ययन किया और इसके आधार पर मत दिया कि इतिहास एक निरुद्देश्य यात्रा नहीं, इसका एक निश्चित उद्देश्य है। टॉयन्बी का मुख्य विचार चुनौती और उसका प्रतिकार है। जो सभ्यताएँ चुनौतियों का मुकाबला कर लेती हैं वे जीवित रह जाती है और आगे बढ़ती है; जो इनका मुकाबला नहीं कर पाती हैं, वे नष्ट हो जाती हैं। जो सभ्यता चुनौतियों का मुकाबला कर सकती हैं, उनके समक्ष नयी चुनौतियां आ जाती है। स्पेंगलर ने जिसका प्रत्युत्तर नहीं दिया था कि संस्कृति का ह्रास कैसे होता है, इसका समाधान टॉयन्बी ने किया है।[22] मानव इतिहास का आधुनिक काल मानवता के इतिहास का अन्तिम चरण है……"यह समय की सम्पूर्णता के चिन्ह धारण किये हुए है जैसे इसके बाद कोई आगामी इतिहास होगा ही नहीं।"[23] उसी ने कहा था कि इतिहास आध्यात्म में अतिक्रमण कर जाता है।[24] इतिहास में "असम्भावित और अदृष्ट की सक्रियता" को पहचानना चाहिए।[25]

20वीं शताब्दी की इतिहास की सर्वमान्य विचारधारा भौतिकवादी है, दूसरे विचारकों को वास्तविकतावादी (Positivist) या अनुभववादी (Empiricist) कहा जाता है, जो इतिहास को अतीत के तथ्यों के अतिरिक्त कुछ नहीं मानते हैं। भौतिकवादी इतिहास को वर्ग सापेक्ष मानते हैं परन्तु ये निरपेक्ष मानते है; उनके अनुसार इतिहास अतीत का सच्चा चित्र है। मध्यम मार्गी इतिहास को न तो पूर्णतः सापेक्ष मानते हैं न निरपेक्ष, अर्थात् इतिहास में वस्तुगतता भी हो सकती है तथापि इतिहास इतिहासकार की दृष्टि से ही लिखा जाता है। रैमों आरों ने कहा था कि मनुष्य एक ही साथ इतिहास का विषयवस्तु और कर्ता (लेखक) दोनों है; अतः वह पूर्णतः पूर्वाग्रह-विहीन नहीं हो सकता। यदि मानव अपने पूर्वाग्रहों के बारे में सचेत हो, तो वह उस पर नियन्त्रण लगा सकता है या उसका रचित इतिहास अधिक सत्य हो सकता है। आज के प्रख्यात प्रवर्तकों में हैम्पेल का कथन है कि इतिहास वैज्ञानिक ही होगा, तथा विलियम ड्रे ने कहा कि इतिहास निश्चित ही सापेक्ष होता है।

कार्लाइल ने इतिहास को महान व्यक्तियों की जीवनी माना है किन्तु "व्यक्ति चरित्रों में लोगों की जो रूचि पैदा हो गई है उससे मनुष्य के इतिहास दृष्टि में जितनी अधिक गलतियां और भ्रम पैदा हुए हैं उतने और किसी चीज से नहीं।"[26]

तथ्य ही सर्वोपरि है, अतीत की अपनी स्मिता है, अतः इन्हीं की इतिहास निर्माण में निर्णायक भूमिका होती है। दूसरे इतिहासकार को सर्वोपरि मानते हैं क्योंकि वही तथ्य का निर्धारण करना है। इतिहासकार वर्तमान में रहता है, अतः वर्तमान ही निर्णायक है, भले ही बात अतीत की की जाय। इटली के बी० क्रोचे ने कहा था कि सभी इतिहास "असमसामयिक इतिहास" होता है।[27] क्रोचे से प्रभावित आक्सफोर्ड इतिहासकार कालिंगवुड ने लिखा कि "अतीत जिसका इतिहासकार अध्ययन करता है मृत अतीत नहीं होता बल्कि ऐसा है जो किन्ही अर्थों में वर्तमान में भी जीवित रहता है।[28] तृतीय वर्ग इतिहास को भी नियमों पर आधारित मानता है, नियम यद्यपि प्राकृतिक विज्ञान के भांति निरपेक्ष न हों पर हैं अवश्य। नियतिवादी वर्ग कहता है कि सब पूर्व निश्चित है और इतिहास उधर ही जा रहा है; ये वर्ग निश्चित ही मानवेत्तर सत्ता को महत्व देते हैं। अन्य मानते हैं कि नियम हैं परन्तु उनके हाथ में मानव कठपुतली नहीं, इन दोनों का भी एक द्वन्दात्मक सम्बन्ध है। परिस्थितियां ही मनुष्य का विचार बनाती हैं किन्तु मानव भी परिस्थितियां बनाता है। इसी वर्ग में मार्क्सवादी व भौतिकवादी रखे जाते हैं। एडवर्ड हैलेट कार ने अपने विचारों का संक्षेप किया है कि "इतिहास, इतिहासकार और उसके तथ्यों की क्रिया-प्रतिक्रिया की एक अनवरत प्रक्रिया है, अतीत और वर्तमान के बीच एक अंतहीन संवाद है।"[29] वस्तुतः "इतिहास के व्याख्या की हमारी उत्कंठा इतनी गहरी है कि यदि हम अतीत पर रचनात्मक दृष्टि न रखें, तो या तो रहस्यवाद की ओर खिंच जाते हैं या वैराग्यवाद की ओर।[30]

संदर्भ सूची

1. जेम्स शाटवेल, "हिस्ट्री ऑफ हिस्ट्री" (कोलम्बिया विश्वविद्यालय प्रेस, न्यू यार्क, 1950) पृ० 4.
2. कालिंगवुड, "आइडिया ऑफ हिस्ट्री" (1945)
3. स्पेंगलर ओस्वाल्ड, "दि डिक्लाईन ऑफ दि वेस्ट" पृ० 94.
4. हेनरी जानसन, "टीचिंग ऑफ हिस्ट्री" (मैकमिलन कं०, न्यू यार्क, 1963 पृ० 11.
5. एफ. एम. कार्नफोर्ड, थ्यूसीडाइडीज, मिथिस्टोरिक्स, पैसिम.
6. हेनरी जानसन, "टीचिंग ऑफ हिस्ट्री" पृ० 12.
7. जी. पी. गूच, "हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स इन दि नाइन्टीथ सेन्चुरी.

8. "City of God" (412–27).
9. "हिस्ट्री ऑफ हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स".
10. ई. एच. कार, "ह्वाट इज हिस्ट्री" पृ० 15.
11. जी. पी. गूच, "हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स इन दी नाइंटीथ सेन्चुरी" पृ० 98.
12. जानसन हेनरी, "टीचिंग ऑफ हिस्ट्री" पृ० 12.
13. 'Wie es Eigentlish Gewessen' (Past as it actually was)
14. जी. पी. गूच "हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स इन दि नाइंटीथ सेन्चुरी" पृ० 101–112.
15. कार्ल मार्क्स, "दास कैपिटल" (1867) भाग 1, पृ० 670–677.
16. मार्क्स एण्ड एंगेल्स, 'वर्क्स' (रूसी संस्करण) 20, पृ० 108.
17. इ. एच. कार, "ह्वाट इज हिस्ट्री" पृ० 107-8.
18. एल ट्राटस्की, "माई लाईफ" (1930) पृ० 422.
19. हीगल, "दि फिलासफी ऑफ हिस्ट्री" पृ० 351–353.
20. ई. एच. कार, "ह्वाट इज हिस्ट्री" पृ० 123.
21. स्पेंगलर, "दि डिक्लाईन ऑफ दि वेस्ट" पृ० 1–46.
22. टॉयन्बी, "ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री" भाग 1 पृ० 271–335.
23. टॉयनबी, "ऐन इनागुरल" लेक्चर ऑन दि स्टडी ऑफ माडर्न हिस्ट्री (आक्सफोर्ड) 1941, पृ० 38.
24. टॉयनबी, "सिविलाइजेशन ऑन ट्रायल" 1948 (भूमिका)
25. टॉयनबी, "ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री" 4, पृ० 414.
26. ऐक्टन, "होम एण्ड फारेन रिव्यू" जनवरी 1863, पृ० 219.
27. क्रोचे, "हिस्ट्री एण्ड दि स्टोरी ऑफ लिबर्टी" (अंग्रेजी अनु.) 1941, पृ० 19.
28. कालिंगवुड, "दि आइडिया ऑफ हिस्ट्री" 1945.
29. कार, ह्वाट इज हिस्ट्री" पृ० 27.
30. प्रो एफ. पोबिक, माडर्न हिस्टोरियन्स एण्ड दि स्टडी ऑफ हिस्ट्री" (1955) पृ० 174.